राष्ट्र जागरण का शंखनाद

शाश्वत हिन्दू गर्जना

वर्ष : 31 माह : फरवरी 2024 सहयोग : ₹ 10

राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं

राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

अयोध्या। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राम लला की प्राण प्रतिष्ठा को भारतीय समाज के शांति धैर्य आपसी सद्भाव, परिपक्वता और समन्वय का प्रतीक बताते हुए कहा कि यह किसी आग को नहीं बल्कि ऊर्जा को जन्म दे रहा है। मोदी अयोध्या में नवनिर्मित श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में चिरप्रतीक्षित प्राण प्रतिष्ठा समारोह में पूजा-अर्चना के बाद देश को संबोधित किया।

उन्होंने कहा आज का अवसर उत्सव का क्षण तो है ही लेकिन इसके साथ ही भारतीय समाज की परिपक्वता के बोध का क्षण भी है। हमारे लिए यह अवसर सिर्फ विजय का नहीं, विनय का भी है। अयोध्या में जन्मभूमि पर मंदिर को लेकर पांच सौ वर्ष से चले आ रहे विवाद की इस सुखद परिणति को नए कालचक्र का उद्भव बताते हुए प्रधानमंत्री ने मंदिर के चबूतरे पर बने मंच से वहाँ एकत्रित भगवा रंग में रंगे जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा, ''वो भी एक समय था, जब कुछ लोग कहते थे कि राम मंदिर बना तो आग लग जाएगी।'' ऐसे लोग भारत के सामाजिक भाव की पवित्रता को नहीं जान पाए।

नए कालचक्र का उद्भव, इतिहास से चंद्रयान तक की चर्चा : भारत ने अयोध्या की गुत्थी को जिस संजीदगी से सुलझाया है वह एक मिसाल है। कई राष्ट्र अपने ही इतिहास में उलझ जाते हैं। ऐसे देशों ने जब भी अपने इतिहास की उलझी हुई गाँठों को खोलने का प्रयास किया, उन्हें बहुत कठिनाई आई। पर, हमारे देश ने इतिहास की इस गाँठ को जिस गंभीरता और भावुकता के साथ खोला है, वो ये बताती है कि हमारा भविष्य हमारे अतीत से बहुत सुंदर होने जा रहा है।

न्याय की लाज रखी : प्रधानमंत्री ने न्यायपालिका का आभार जताया और कहा कि मंदिर का निर्माण न्याय के मार्ग से हुआ है। श्रीराम भारत के संविधान के प्रथम पृष्ठ पर उपस्थित हैं लेकिन संविधान के अस्तित्व में आने के बाद भी दशकों तक प्रभु श्रीराम के अस्तित्व को लेकर कानूनी लड़ाई चली। भारत की न्यायपालिका ने न्याय की लाज रख ली। न्याय के पर्याय प्रभु राम का मंदिर भी न्यायबद्ध तरीके से बना।

राष्ट्र निर्माण की सौगंध : अयोध्या भूमि हम सभी से कुछ सवाल कर रही है। श्रीराम का भव्य मंदिर तो बन गया... अब आगे क्या ? सदियों का इंतजार तो खत्म हो गया... अब आगे क्या ? मोदी ने कहा कि हमें आज से अगले एक हजार साल के भारत की नींव रखनी है। मंदिर निर्माण से आगे बढ़कर अब हम सभी देशवासी इस पल से भव्य-दिव्य भारत के निर्माण की सौगंध लेते हैं।

युवा पीढ़ी पर भरोसा : देश अपनी समृद्ध परंपरा और आधुनिकता की अपार संभावनाओं को साधकर दुनिया में एक समृद्ध विकसित राष्ट्र के रूप में खड़ा होगा। उन्होंने भारत की युवा पीढी के सामर्थ्य पर पूरा भरोसा जताते हुए चंद्रयान मिशन, आदित्य वेधशाला और आइएनएस विक्रांत तथा तेजस लड़ाकू विमान के निर्माण में सफलता का उल्लेख किया।

आदर्शों की प्रतिष्ठा : राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा के इस आयोजन से पूरा विश्व जुड़ा हुआ है, उसमें राम की सर्वव्यापकता के दर्शन हो रहे हैं। जैसा उत्सव भारत में है, वैसा ही अनेक देशों में है। ये साक्षात मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राण प्रतिष्ठा है। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' ये संकल्प हम सदियों से दोहराते आए हैं। आज वही संकल्प राममंदिर के रूप में साकार हो रहा है।

□□□

प्रधानमंत्री जी का पूर्ण भाषण पढ़ने के लिए QR कोड़ स्कैन करें।

शाश्वत हिन्दू गर्जना

(मासिक)

महाकौशल प्रांत

वर्ष 31 अंक – 2

फरवरी 2024

विक्रमाब्द् – 2080

युगाब्द – 5125

✤

संपादक

डॉ. किशन कछवाहा

✤

सह–संपादक

डॉ. नुपूर निखिल देशकर

✤

कार्यकारी–संपादक

कृष्ण मुरारी त्रिपाठी 'अटल'

✤

सलाहकार संपादक

डॉ. यतीश जैन

चंद्रशेखर पचौरी

✤

प्रकाशक

नरेन्द्र जैन

विश्व संवाद केन्द्र

महाकौशल न्यास, जबलपुर

✤

सम्पर्क

प्लॉट नं.1, म.नं. 1692

नव आदर्श कॉलोनी,

गढ़ा मार्ग, जबलपुर

फोन–0761-4006608

✤

मुद्रक

ग्रेनेडियर्स प्रिंटिंग प्रेस

जबलपुर

फोन : 0761-2620184

भए प्रगट कृपाला

संपादकीय...

22 जनवरी 2024 का दिन इतिहास में स्वर्णिम के रूप में अंकित हो गया क्योंकि इस दिन 500 वर्ष के लम्बे अंतराल के पश्चात् भगवान राम लला अपने राजसी वैभव और सम्मान के साथ अपनी जन्मभूमि पर पुर्नस्थापित हुए। माननीय प्रधानमंत्री जी ने मन्दिर में मूर्ति स्थापना के पश्चात् दो बातें मुख्य रूप से कहीं **"देव से देश"** और **"राम से राष्ट्र"** इन्हीं दो बातों पर केन्द्रित होकर हमें राष्ट्र निर्माण का संकल्प लेना होगा। भारत के प्रत्येक नागरिक को देवतुल्य आचरण का अनुकरण करके राजाराम के प्रति समर्पित होकर रामराज्य के निर्माण का संकल्प लेना होगा। रामराज्य की संकल्पना को साकार करने हमें समरसता को जीवन में, समाज में और राष्ट्र में अपनाना होगा। तभी हम भगवान श्रीराम की आध्यात्म ऊर्जा को ग्रहण कर सकेंगे। **यतो धर्मः ततो जयः** – जहाँ धर्म है, वहीं विजय है। धर्म क्षीण होते ही आक्रांताओं के आक्रमण बढ़े और पाँच शताब्दियों के दीर्घ संघर्षों से संकल्पों से सिद्धि का परिणाम है। आज राम लला पुनः अपने स्थान पर विराजित हुए।

यह प्रारम्भिक श्रृखंला है उस खण्ड-खण्ड होती भारत की आस्था को सजाने की। जहाँ से भारत के जनमानस को धर्म से और धर्म को राष्ट्र को जोड़ने के लिए भारत की आध्यात्म चेतना और गौरवपूर्ण धार्मिक आस्था को पुनः स्थापित किया जा रहा है। यह ऐसे विशिष्ट संयोग है जो भारत को आत्मनिर्भर, प्रगतिशील, वैज्ञानिक होने के साथ-साथ आधुनिक स्वरूप में विश्व पटल पर स्थापित करेगा।

यह भारत के सोए हुए स्वत्व के जागरण का अवसर है इस तथ्य का प्रमाण भगवान राम लला की प्राणप्रतिष्ठा के अवसर पर करोड़ों-करोड़ों नयनों से बहते अविरल नीर ने निश्छल प्रवाहित होकर दिया। गंगाजल की भाँति आँखों के आसुंओं ने हर मनुष्य के मनमन्दिर में श्रीराम लला को विराजित कर "राम से राष्ट्र" की संकल्पना को साकार करने का प्रण ले लिया है।

जाकर नाम सुनत सुभ होई।
मोरे गृह आवा प्रभु सोई।।

जिनके नाम का श्रवण करते ही कल्याण होता है वहीं प्रभु मनरूपी घर में विराजित हो गए हैं। श्रीराम लला की नयनाभिराम श्याम वर्ण मूर्ति के दर्शन से सम्पूर्ण विश्व भावविव्हल है। सृष्टि का प्रत्येक कण-कण जड़ चेतन सभी राम में रम गये हैं।

भारत के प्रधानमंत्री ने एक राजा की भाँति-राष्ट्र के आराध्य भगवान राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हेतु ग्यारह दिवस का व्रत-निराहार रहकर किया और प्रभु की छत्रछाया अखण्ड भारत के कल्याण के लिए अनवरत् बनी रहे इस हेतु उन्हें छत्र भेंट किया है।

प्रभु की कृपा भयऊ सब काजू।
जनम हमार सुफल भा आजू।।

राम मन्दिर की स्थापना से पाँच शताब्दियों से संघर्ष करने वाली पुण्यआत्माओं का बलिदान और श्रीराम के चरणाविन्द में समर्पित भारतीय जन-मानस का जन्म सफल हो गया। क्योंकि राम लला जन्मभूमि में स्थापित हो गये। **भए प्रगट कृपाला..........**

❑❑❑

राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जागरण का प्रतीक श्रीराम मंदिर : डॉ मोहन भागवत

हमारे भारत का इतिहास पिछले लगभग डेढ़ हजार वर्षों से आक्रांताओं से निरंतर संघर्ष का इतिहास है। आरंभिक आक्रमणों का उद्देश्य लूटपाट करना और कभी-कभी (सिकंदर जैसे आक्रमण) अपना राज्य स्थापित करने के लिए होता था। परंतु इस्लाम के नाम पर पश्चिम से हुए आक्रमण यह समाज का पूर्ण विनाश और अलगाव ही लेकर आए। देश-समाज को हतोत्साहित करने के लिए उनके धार्मिक स्थलों को नष्ट करना अनिवार्य था, इसलिए विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत में मंदिरों को भी नष्ट कर दिया। ऐसा उन्होंने एक बार नहीं, बल्कि अनेकों बार किया। उनका उद्देश्य भारतीय समाज को हतोत्साहित करना था ताकि भारतीय स्थायी रूप से कमजोर हो जाएँ और वे उन पर अबाधित शासन कर सकें।

1857 में विदेशी अर्थात ब्रिटिश शक्ति के विरुद्ध युद्ध योजनाएं बनाई जाने लगी तो उसमें हिंदू और मुसलमानों ने मिलकर उनके विरुद्ध लड़ने की तैयारी दर्शाई और तब उनमें आपसी विचार-विनिमय हुआ। और उस समय गौ-हत्या बंदी और श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति के मुद्दे पर सुलह हो जाएगी, ऐसी स्थिति निर्माण हुई। बहादुर शाह जफर ने अपने घोषणापत्र में गौहत्या पर प्रतिबंध भी शामिल किया। इसलिए सभी समाज एक साथ मिलकर लड़े। उस युद्ध में भारतीयों ने वीरता दिखाई लेकिन दुर्भाग्य से यह युद्ध विफल रहा, और भारत को स्वतंत्रता नहीं मिली, ब्रिटिश शासन अबाधित रहा, परन्तु राम मंदिर के लिए संघर्ष नहीं रुका।

1947 में देश को स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जब सर्वसम्मति से सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया, तभी ऐसे मंदिरों की चर्चा शुरू हुई। राम जन्मभूमि की मुक्ति के संबंध में ऐसी सभी सर्वसम्मति पर विचार किया जा सकता था, परंतु राजनीति की दिशा बदल गयी। भेदभाव और तुष्टीकरण जैसे स्वार्थी राजनीति के रूप प्रचलित होने लगे और इसलिए प्रश्न ऐसे ही बना रहा। सरकारों ने इस मुद्दे पर हिंदू समाज की इच्छा और मन की बात पर विचार ही नहीं किया। इसके विपरीत, उन्होंने समाज द्वारा की गई पहल को उध्वस्त करने का प्रयास किया। स्वतन्त्रता पूर्व से ही इससे संबंधित चली आ रही कानूनी लड़ाई निरंतर चलती रही। राम जन्मभूमि की मुक्ति के लिए जन आंदोलन 1980 के दशक में शुरू हुआ और तीस वर्षों तक जारी रहा।

धार्मिक दृष्टि से श्री राम बहुसंख्यक समाज के आराध्य देव हैं और श्री रामचन्द्र का जीवन आज भी संपूर्ण समाज द्वारा स्वीकृत आचरण का आदर्श है। इसलिए अब अकारण विवाद को लेकर जो पक्ष-विपक्ष खड़ा हुआ है, उसे खत्म कर देना चाहिए। इस बीच में उत्पन्न हुई कड़वाहट भी समाप्त होनी चाहिए। समाज के प्रबुद्ध लोगों को यह अवश्य देखना चाहिए कि विवाद पूर्णतः समाप्त हो जाये। अयोध्या का अर्थ है 'जहाँ युद्ध न हो', 'संघर्ष से मुक्त स्थान' वह नगर ऐसा है। संपूर्ण देश में इस निमित्त मन में अयोध्या का पुनर्निर्माण आज की आवश्यकता है और हम सभी का कर्तव्य भी है।

अहंकार, स्वार्थ और भेदभाव के कारण यह विश्व विनाश के उन्माद में है और अपने ऊपर अनंत विपत्तियाँ ला रहा है। सद्भाव, एकता, प्रगति और शांति का मार्ग दिखाने वाले जगदाभिराम भारतवर्ष के पुनर्निर्माण का सर्व-कल्याणकारी और 'सर्वेषाम् अविरोधी' अभियान का प्रारंभ, श्री रामलला के राम जन्मभूमि में प्रवेश और उनकी प्राण-प्रतिष्ठा से होने वाला है। हम उस अभियान के सक्रिय कार्यान्वयनकर्ता हैं। हम सभी ने 22 जनवरी के भक्तिमय उत्सव में मंदिर के पुनर्निर्माण के साथ-साथ भारत और इससे पूरे विश्व के पुनर्निर्माण को पूर्तता में लाने का संकल्प लिया है। इस भावना को अंतर्मन में स्थापित करते हुए अग्रसर हो ...

वर्ष 1949 में राम जन्मभूमि पर भगवान श्री रामचन्द्र की मूर्ति का प्राकट्य हुआ। 1986 में अदालत के आदेश से मंदिर का ताला खोल दिया गया। आगामी काल में अनेक अभियानों एवं कारसेवा के माध्यम से हिन्दू समाज का सतत संघर्ष जारी रहा। 2010 में इलाहाबाद हाईकोर्ट का फैसला स्पष्ट रूप से समाज के सामने आया। जल्द से जल्द अंतिम निर्णय के माध्यम से इस मुद्दे को हल करने के लिए आगे भी आग्रह जारी रखना पड़ा। 9 नवंबर 2019 में 134 वर्षों के कानूनी संघर्ष के बाद सुप्रीम कोर्ट ने सत्य और तथ्यों को परखने के बाद संतुलित निर्णय दिया। दोनों पक्षों की भावनाओं और तथ्यों पर भी विचार इस निर्णय में किया गया था। कोर्ट में सभी पक्षों के तर्क सुनने के बाद यह निर्णय सुनाया गया है। इस निर्णय के अनुसार मंदिर के निर्माण के लिए एक न्यासी मंडल की स्थापना की गई। मंदिर का भूमिपूजन 5 अगस्त 2020 को हुआ और अब पौष शुक्ल द्वादशी युगाब्द 5125, तदनुसार 22 जनवरी 2024 को श्री रामलला की मूर्ति स्थापना और प्राणप्रतिष्ठा समारोह का आयोजन किया गया है।

❑❑❑

माघ शुक्ल सप्तमी

माघ माह की शुक्ल पक्ष की सप्तमी को भारत के प्रत्येक प्रांत में अलग-अलग रूप से सप्तमी मनाई जाती है। इसे रथ सप्तमी, अचला सप्तमी, नर्मदा जन्मोत्सव आदि आदि रूपों में मनाया जाता है।

समुद्र मंथन के पश्चात उससे जो गरल अर्थात विष निकला उसे भगवान महादेव ने अपने कंठ पर धारण किया और हिमालय पर तपस्या करने में लीन हो गए। तप की उष्मा से भगवान शिव के शरीर से निकले श्वेत बिंदु एक धारा बनाकर प्रवाहित हो गई इस धारा ने एक सुंदर और तपस्वी कन्या के रूप में जन्म लिया। भगवान शिव से जब उस कन्या ने अपना परिचय पूछा तो भगवान ने कहा... क्योंकि आपका जन्म मेरे शरीर से निकले हुए श्वेत बिंदुओं से हुआ है अतः आप अमृता है अर्थात जिसकी कभी मृत्यु नहीं हो सकती इस दृष्टि से आज से आप नर्मदा (न मरने वाली धारा के रूप में और विश्व का कल्याण करने वाली सर्वश्रेष्ठ नदी) के रुप में पृथ्वी पर प्रवाहित होगी। यह दिन माघ शुक्ल पक्ष की सप्तमी का था। कहते हैं नर्मदा जी का हर कंकड़ -शंकर के रूप में पूजा जाता है।

आज के ही दिन ऋषि कश्यप और माता अदिति के यहाँ भगवान सूर्य देव का अवतरण हुआ। भगवान आदित्य नवग्रह के राजा कहलाए। आप सात घोड़े से जुते हुए रथ में सवार होकर विचरण करते हैं, इसीलिए इस दिन को सूर्य सप्तमी या रथ सप्तमी के रूप में भी जाना जाता है। इस दिन भगवान सूर्य अत्यंत प्रसन्न रहते हैं, उनकी आराधना करने से मन वांछित फल की प्राप्ति होती है।

एक पौराणिक कथा के अनुसार द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण के पुत्र शाम्ब ने अपने सुंदर शरीर पर गर्व करते हुए, ऋषि दुर्वासा की तप करने के कारण दुर्लभ हुई देह पर व्यंग्य किया। जिससे ऋषि दुर्वासा ने क्रोधित होकर उन्हें कोढ़ी होने का शाप दे दिया। तब भगवान श्री कृष्ण ने अपने पुत्र को इस शाप से मुक्त होने के लिए रथ सप्तमी का उपवास एवं भगवान सूर्य की आराधना करने का मार्ग सुझाया, जिसका अनुकरण करने से शाम्ब को इस शाप से मुक्ति मिली।

❑❑❑

स्वाभिमान और श्रद्धा का प्रतीक श्री राम मंदिर : शांताक्का

अयोध्या जी में श्री राम जन्मभूमि तीर्थस्थली पर श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा एवं मंदिर निर्माण कार्य को सफलता पूर्वक संपन्न करने के लिए राष्ट्र सेविका समिति श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास का हृदय से अभिनंदन करती है। राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका ने कहा कि पांच सौ वर्षों से लगी हुई कालिमा को हिंदू समाज के संगठित प्रयास ने ध्वस्त किया। हिंदू समाज के स्वयं स्फूर्त और अभूतपूर्व उत्साह से यह प्रतीत हो रहा है कि अब

भारत की अंतः चेतना जाग उठी है। आज का दिन राष्ट्रीय स्वाभिमान का दिन है, गौरव का दिन है, आज से नवयुग का प्रारंभ हो रहा है।

शांताक्का जी ने अपने शुभकामना संदेश में आगे भविष्य में भी हिंदू भावनाओं को कोई कभी ठेस नहीं पहुंचा सकता यह विश्वास इस मंदिर निर्माण के कारण उत्पन्न हुआ है। स्वाभिमान और श्रद्धा का प्रतीक श्रीराम मंदिर शतकों तक धर्माचरण का प्रेरणा स्रोत रहा है और रहेगा ऐसा विश्वास है। ❑❑❑

राष्ट्र और धर्म हित में मतभेदों को भुलाकर एकता का संदेश देना ही भारतीय परंपरा : शंकराचार्य

कांची कामकोटि पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री विजयेंद्र सरस्वती जी महाराज ने कहा कि राष्ट्र हित, धर्म हित और विश्व के कल्याणार्थ जब भी कोई पहल होती है, तो आपसी सभी मतभेदों को भुलाकर एकता का संदेश देना ही भारतीय संस्कृति और परंपरा है।

श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा से एक दिन पहले जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री विजयेंद्र सरस्वती जी महाराज आज राम नगरी अयोध्या पहुंचे और यह संदेश दिया। शंकराचार्य के सचिव गजानंद कांड़े ने बताया कि जगद्गुरु ने कहा कि हमारे देश में जब - जब राष्ट्र हित की दिशा में कोई पहल हुई है तब-तब लोग आपसी मतभेद भुलाकर एक साथ आगे आये हैं। यही हमारी संस्कृति है। इसी तरह धर्म हित की पहल होने पर भी मतभेदों को भुलाकर एकता का संदेश देना भारत की गौरवशाली परंपरा रही है।

गजानंद कांड़े के अनुसार जगद्गुरु शंकराचार्य ने यह भी कहा कि विश्व कल्याण के लिये पहल होने पर भी भारत का प्रत्येक नागरिक आपसी मतभेद भुलाकर दुनिया को एकता का संदेश देता है।

उन्होंने आगे कहा कि हमारे देश में राष्ट्र अथवा धर्म हित की हर पहल में विश्व का हित स्वतः निहित रहता है। इसलिये ऐसे विशेष अवसरों पर हमें सामंजस्य बनाकर विश्व को एकता का संदेश देना चाहिये। यही युगधर्म है। उन्होंने आगे कहा कि श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण एक वैश्विक चेतना का आधार बनेगा।

❑❑❑

मोदी ने शिवाजी के तप की याद दिला दी : गिरि

ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष गोविंददेव गिरि महाराज ने कहा कि 500 वर्ष की प्रतीक्षा के बाद राम लला की प्रतिष्ठा हो पाई है। युग परिवर्तन की लाज रखने में प्रधानमंत्री मोदी ने बड़ी भूमिका निभाई है। यह देश नहीं विश्व का सौभाग्य है, जिसे प्रधानमंत्री मोदी जैसा राजर्षि प्राप्त हुआ। उन्होंने कठोर उपवास किया जो धार्मिक नेताओं द्वारा निर्धारित अपेक्षाओं से कहीं अधिक था। मैंने तो उनसे कहा था कि आपको 3 दिन का उपवास करना है, लेकिन उन्होंने 11 दिन का संपूर्ण व्रत किया।

❑❑❑

सद्भाव व सहयोग जरूरी
- डॉ. मोहन भागवत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने देश में सद्भाव और सहयोग की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा। कि प्रत्येक नागरिक मिलकर देश की प्रगति के लिए कार्य करे। राम कलह के कारण अयोध्या से बाहर गए थे और पूरी दुनिया की कलह मिटाकर लौटे। आज 500 वर्ष बाद श्रीराम फिर लौटे हैं। हमें क्लेश- कलह नहीं बल्कि उच्च आचरण से देश की तरक्की में योगदान देना होगा।

मैं सबसे भाग्यशाली योगीराज

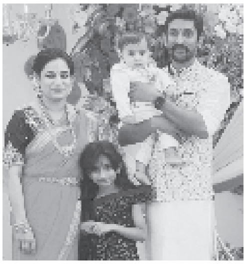

राम लला की मूर्ति को गढ़ने वाले मैसूरु के मूर्तिकार अरुण योगीराज ने सोमवार को कहा, मैं पृथ्वी पर सबसे भाग्यशाली व्यक्ति हूं और आज मेरे जीवन का सबसे अच्छा दिन है। भगवान राम ने मुझे इस शुभ कार्य के लिए चुना है। इससे पहले वे शंकराचार्य, सुभाष चंद्र बोस की मूर्तियां बना चुके हैं। उन्होंने राम लला की मूर्ति तीन अरब साल पुरानी चट्टान से बनाई है।

❑❑❑

सूरत के हीरा कारोबारी ने भगवान राम को दान किया 11 करोड़ का मुकुट

कहते हैं कि ये धरती दानवीरों से खाली नहीं है। कुछ ऐसा ही एक मामला सूरत से सामने आ रहा है। यहां एक हीरा कारोबारी ने भगवान राम के लिए 11 करोड़ का मुकुट दान किया है।

ऐसे ही सूरत के एक हीरा व्यापारी ने अयोध्या राम मंदिर के लिए सोना, हीरे और चांदी से बना 11 करोड़ रुपए का आकर्षित मुकुट बनाकर भगवान श्री राम को अर्पित किया है।

मुकेश पटेल ने दिया दान – दुनिया में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव लोगों ने धूमधाम से मनाया है। प्राण प्रतिष्ठा की पूर्व संध्या पर सूरत के हीरा व्यापारी और ग्रीन लेब डायमंड कंपनी के मालिक मुकेश पटेल ने अयोध्या राम मंदिर के गर्भ गृह में मंदिर के ट्रस्टियों को भगवान श्री राम के लिए तैयार किया हीरा, सोना और चांदी जड़ित मुकुट अर्पण किया। विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय खजानची दिनेश भाई नावडिया ने जानकारी दी कि ग्रीन लेब डायमंड कंपनी के मालिक से उन्होंने कहा था कि आप भी राम मंदिर के लिए कुछ दान कीजिए। इस पर मुकेश भाई ने अपने परिवार वालों से विचार-विमर्श कर सोने और हीरो जड़ित मुकट देने की इच्छा जताई थी।

साढ़े चार किलो सोने का हुआ इस्तेमाल– दिनेश भाई नावडिया ने आगे कहा कि इसके बाद 5 जनवरी तक नवनिर्मित राम मंदिर में कौन-सी मूर्ति विराजमान होगी वह तय नही था। इसके बाद कंपनी के दो कर्मचारियों को प्लेन से अयोध्या भेजा गया और जैसे ही पता चला कि कौन-सी मूर्ति विराजमान होगी, कर्मचारी मुकुट का माप लेकर सूरत लौटे और मुकुट बनाने का कार्य शुरू हुआ। 6 किलो की वजनी मुकट में साढ़े चार किलो सोने का इस्तेमाल किया गया है। इस मुकुट में छोटे बड़े आकार के हीरे, मणिक, मोती, नीलम रत्न भी लगाए गए हैं। अब यह मुकुट भगवान राम के सिर पर शोभायमान होगा। प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के 1 दिन पहले ही ये मुकुट न्यासी चंपतराय को सौंपा गया है, जिसकी कीमत 11 करोड़ रुपये बताई जा रही है।

इन धनवानों ने भी दिल खोल किया दान – सबसे ज्यादा दान करने वाले सूरत के हीरा कारोबारी दिलीप कुमार ने 101 किलो सोना दिया है, इस सोने से मंदिर के 8 दरवाजे पर सोने की परत चढ़ाया गया है, इसकी कीमत करीब 68 करोड़ रुपए है। वहीं, राम मंदिर के दूसरे सबसे बड़ा दानवीर कथावाचक और आध्यात्मिक गुरु मोरारी बापू ने किया है। मोरारी बापू ने राम मंदिर के लिए 11.3 करोड़ रुपए का दान दिया है। वहीं, तीसरे नंबर पर सूरत के हीरा कारोबारी गोविंद भाई ढोलकिया ने 11 करोड़ और साथ ही मुकेश पटेल ने भी 11 करोड़ का मुकट दान दिया है।

❑❑❑

प्रतिज्ञा पूरी...

सब के राम

अयोध्या के 115 गांवों के सूर्यवंशी ठाकुर 500 साल बाद पहनी पगड़ी और चमड़े के जूते। 500 साल पहले ली थी पगड़ी नहीं पहनने की शपथ।

अयोध्या धाम से सटे सरायरासी गांव में बड़ी संख्या में क्षत्रिय समाज के लोग रहते हैं, जो स्वयं को सूर्यवंश से जुड़ा बताते हैं। इसी परिवार से जुड़े सूर्यवंशी ठाकुरों का कहना है कि आज से

500 वर्ष पूर्व सूर्यवंशी ठाकुर गजराज सिंह ने भगवान राम के मंदिर की रक्षा के लिए मीर बाकी और अन्य मुगलों से लड़ाई लड़ी थी और शहीद हो गए थे।

उसके बाद से इस वंश के लोगों ने प्रतिज्ञा ली थी कि जब तक भगवान राम का मंदिर पुनः नहीं बन जाएगा, तब तक वह अपने सिर पर पगड़ी, पैर में जूते और हाथ में छतरी लेकर नहीं चलेंगे।

❑❑❑

जानिए राम लला को सुशोभित 15 रत्न जड़ित आभूषणों के बारे में

1 शीष पर मुकुट : उत्तर भारतीय परंपरा वाला मुकुट स्वर्ण निर्मित है, जिसमें माणिक्य, पन्ना और हीरे जड़े हैं। मुकुट के ठीक मध्य में भगवान सूर्य अंकित हैं। दाई ओर मोतियों की लड़ियां पिरोई गई हैं।

2 कुंडल : मुकुट या किरीट के अनुरूप, उसी डिजाइन में कर्ण आभूषण बनाए गए हैं, जिनमें मयूर आकृतियां हैं।

3 कंठा : अर्द्धचंद्राकार रत्नों से जड़ित सोने का कंठा है, जिसमें मंगल का विधान रचते पुष्प अर्पित हैं। मध्य में सूर्य हैं। ये हीरे, माणिक्य जड़ित हैं। नीचे पन्ने की लड़ियां हैं।

4 भगवान के हृदय : कौस्तुभमणि धारण कराया गया है, जो बड़ा माणिक्य और हीरे जड़ित है। भगवान विष्णु तथा उनके अवतार हृदय में कौस्तुभमणि धारण करते हैं।

5 पदिक : कंठ से नीचे तथा नाभिकमल से ऊपर पहनाया गया हार है। यह पदिक लटकन हैं। दाहिने हाथ में स्वर्ण बाण है।

6 वैजयंती : भगवान का तीसरा सबसे लंबा स्वर्ण निर्मित हार है। इसे विजय के प्रतीक के रूप में पहनाया जाता है।

7 करधनी : स्वर्ण निर्मित रत्नजड़ित है। इसमें प्राकृतिक सुषमा का अंकन है। पवित्रता का बोध कराने वाली 5 घंटियां हैं।

8 भुजबंध : दोनों भुजाओं में स्वर्ण और रत्नों से जड़ित भुजबन्ध पहनाए गए हैं।

9 कंकण/कंगन : दोनों हाथों में रत्नजड़ित सुंदर कंगन पहनाए गए हैं।

10 मुद्रिका : बाएं और दाएं दोनों हाथों की मुद्रिकाओं में रत्नजड़ित मुद्रिकाएं सुशोभित हैं, जिनमें से मोती लटक रहे हैं।

11 पैरों में छड़ा, पैजनियां : पहनाए गए हैं। सोने की पैजनियां पहनाई गई हैं।

12 बायें हाथ : इसमें सोने का धनुष है, जिसमे मोती, माणिक्य और पन्ने की लटकन है। दाहिने हाथ में स्वर्ण बाण है।

13 गले में : फूलों की मोतियों वाली वनमाला है। इसका निर्माण हस्तशिल्प संस्था शिल्पमंजरी ने किया है।

14 मस्तक : पारम्परिक मंगल-तिलक को हीरे-माणिक्य से रचा गया है।

15 चरणों में : कमल सुसज्जित है, पाँच लड़ियों वाला हीरे और पन्ने का पंचलड़ा 15 उसके नीचे स्वर्णमाला सजी है।

5 वर्ष के बालक का रूप इसलिए पारंपरिक ढंग से उनके सम्मुख खेलने के लिए चांदी से निर्मित झुनझुना, हाथी, घोड़ा, ऊंट, खिलौना गाड़ी तथा लट्टू रखे गए।

❑❑❑

प्राण प्रतिष्ठा के दिन म.प्र. में जन्मे 600 से ज्यादा बच्चे,

छतरपुर में जुड़वां भाइयों का नाम रखा- राम और लक्ष्मण

श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा का महत्वपूर्ण दिन तमाम लोगों के लिए यादगार बन गया। छतरपुर जिला अस्पताल में 31 प्रसूत ने बच्चों को जन्म दिया। इनमें 24 नॉर्मल व 8 सिजेरियन डिलवरी हुईं और 19 बेटे व 13 बेटियों की किलकारियां हास्पिटल में गूंजीं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा जिस समय अयोध्या में उत्साह-पूर्वक 22 जनवरी को संपन्न हो रही थी, उसी समय छतरपुर जिला अस्पाताल में एक महिला ने दो जुड़वां बच्चों को जन्म दिया। दोनों शिशुओं का नाम रखा- राम और लक्ष्मण।

इस खास अवसर पर बच्चे और बच्चियों के राम और सीता के नाम पर नामकरण किए गए। अस्पाताल में बच्चों की किलकारियां गूंजने पर परिजनों और प्रसूता मांओं का उत्साह और भी दुगना हो गया। सभी लोग खुशियां मनाते हुए नजर आए। अस्पाल में जुड़वां भाइयों राम-लक्ष्मण का जन्म जिले की बसाटा निवासी ममता रैकवार की कोख से हुआ। ममता के पति भवानीदीन रैकवार ने खुशी का इजहार करते हुए कहा, हमें इस बात की खुशी है कि जहां अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा हो रही थी, वहीं हमें दो जुड़वां पुत्र मिले हैं। जिनका नाम हमने राम और लक्ष्मण रखा है। ऐसा लग रहा है कि जैसे हमारे घर साक्षात भगवान श्रीराम और लक्ष्मण जन्मे हों।

जन्म देने के बाद बच्चों का शारीरिक चेकअप करने पहुंची डॉक्टरों की टीम ने शिशुओं का वजन समेत उनका चेकअप किया। दोनों बच्चों का वजन 3 किलो तकरीबन हैं और बच्चे पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं। जिला अस्पताल में सोमवार 22 जनवरी की दोपहर 12 बजे से शाम 7 बजे के बीच 31 गर्भवती महिलाओं की डिलीवरी हुई।

मध्यप्रदेश में लगभग 600 से ज्यादा बच्चों ने 22 जनवरी की तारीख को जन्म लिया। अकेले राजधानी भोपाल में ही 150 के करीब डिलीवरी हुईं। इसके अलावा, ग्वालियर में 90, इंदौर में 35 और शिवपुरी में 33 से ज्यादा बच्चों का जन्म हुआ।

❑❑❑

सिवनी से अयोध्या भेजा गया 300 क्विंटल चावल

राम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के बाद राम लला विराजमान होने जा रहे हैं। जिसको लेकर सिवनी जिले में राम भक्त मंदिर में पूजन पाठ कर रहे है। वहीं सिवनी के उत्साही नागरिकों ने अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए 300 क्विंटल एचएमटी चावल का सहयोग भेजा गया। शिव की नगरी सिवनी में ट्रक के माध्यम से मठ मंदिर में पूजन के बाद चावल की भेंट को अयोध्या भेजा गया।

❑❑❑

अयोध्या के लिए कटनी से भेजी दाल और धनिया

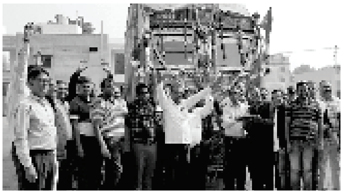

अयोध्या में भव्य राम मंदिर निर्माण एवं प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम में आयोजित होने वाले भंडारे के लिए कटनी से दाल व धनियां भेजी गई है। कटनी में भी इस उत्सव को भव्य बनाने के लिए शहरवासी तैयारियों में जुटे। उत्साहित जनमानस द्वारा स्वप्रेरणा से इस पवित्र कार्य में सहभागिता का प्रण लिया जिसके लिए विभिन्न सामाजिकजनों एवं लघु उद्योग भारती, राहर दाल, चना दाल मिल संघ के सदस्यों के सहयोग से कटनी से 30 क्विंटल दाल और 18 क्विंटल धनिया आज श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण संपर्कमहाअभियान के तहत अयोध्या जी प्राण प्रतिष्ठा समारोह 22 जनवरी के लिए रवाना की गई। उक्त ट्रक श्री संजय इंडस्ट्रीज औद्योगिक क्षेत्र बरगवां से अयोध्या के लिए। रवाना किया गया। इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद के प्रांत संगठन मंत्री सुरेंद्र सिंह, अभियान के प्रांत सहसंयोजक उमेश मिश्र, विभाग प्रचारक श्रवण ने झंडी दिखा के रवाना किया।

❑❑❑

श्रीलंका : अशोक वाटिका स्थित अम्मन मंदिर में भव्य उत्सव मनाया

अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बीच श्रीलंका में रामायण से जुड़े पौराणिक स्थलों पर भव्य उत्सव मनाया गया। सोमवार को श्रीलंका के मध्य में स्थित नुवारा एलिया में सीता अम्मन मंदिर, चिलाव में मुनेश्वरम मंदिर, मनावरी मंदिर और कोलंबो में अंजनेयार मंदिरों में सजावट की गई है। सीता अम्मन मंदिर उस स्थान पर है, जहां सीता को रावण ने बंदी बनाकर रखा था। दिवुरुम्पोला में सीता ने अग्नि परीक्षा दी थी। रावण को पराजित करने बाद राम ने मुनेश्वरम में भगवान शिव की प्रार्थना की थी।

नेपाल : 50 हजार लोग जानकी मंदिर पहुंचे, सवा लाख दीपक से दिवाली – अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर पूरे नेपाल में जश्न का माहौल है। सबसे अधिक रौनक पौराणिक मिथिलांचल की राजधानी जनकपुर में है। जिसे माता सीता की नगरी माना जाता है। यहां पर दिनभर में 50 हजार से ज्यादा लोगों ने जानकी मंदिर में दर्शन किए। जनकपुर के स्थानीय नेता मिथिलेश कर्ण ने कहा कि जनकपुर के जानकी मंदिर को भव्य रोशनी से सजाया गया है। शाम को यहां सवा लाख से ज्यादा दीपक जलाकर दिवाली मनाई गई।

❑❑❑

प्राण प्रतिष्ठा का यूट्यूब में सजीव प्रसारण बना नया विश्व कीर्तिमान

श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के सजीव प्रसारण ने एक यूट्यूब चौनल पर समय विशेष में सर्वाधिक दर्शकों की संख्या के साथ एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाया है। प्रधानमंत्री मोदी के आधिकारिक यूट्यूब चौनल पर 1.17 करोड़ लोगों ने प्राण प्रतिष्ठा के समारोह के सीधे प्रसारण को एक साथ देखा । यूट्यूब इतिहास में किसी सजीव प्रसारण में ये अब तक के सबसे अधिक दर्शकों की संख्या वाला कार्यक्रम बना। राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के दो सजीव प्रसारण हुए थे। पहला 5 घंटे 36 मिनट 55 सेकंड है, जिस पर 60 लाख रियल टाइम पीक व्यूज मिले। दूसरा प्रसारण 3 घंटे 33 मिनट 25 सेकंड था। इस पर रियल टाइम पीक व्यूज 57 लाख रहे । यानी कुल 1.17 करोड़ दृश्य संख्या थी।

❑❑❑

अयोध्या 5 तीर्थंकरों की भी जन्मभूमि

चार भव्य जैन मंदिर बनाए जा रहे

अयोध्या के भव्य राम जन्मभूमि मंदिर में आज भले ही रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा की धूमधाम संसार भर में हो, लेकिन अयोध्या के आंगन में अकेले श्रीराम ही नहीं खेले। धर्म की इस उर्वरभूमि ने पांच तीर्थकरों को भी जन्म दिया। इसी सरयू नदी ने उन्हें भी मनुष्य से प्रमात्मा बनते देखा। 24 तीर्थकरों में सबसे पहले तीर्थकर भगवान श्री ऋषभदेव, दूसरे श्री अजितनाथ, चौथे श्री अभिनंदन नाथ, पांचवें श्री सुमतिनाथ और चौदहवें श्री अनंतनाथ। इस प्रकारजैन परंपरा में पांच गुना अधिक पवित्र है अयोध्या, मगर रायगंज में तीर्थकरों के स्थान पर एक नहीं, चार विशाल मंदिरों के निर्माण की हलचल पर किसी की दृष्टि नहीं है। पहला मंदिर चक्रवर्ती सम्राट भरत का मंदिर। मान्यता है कि भरत समेत ऋषभदेव के 101 पुत्र थे, उनका महल भी बगल में बन रहा है। पाताल, पृथ्वी और स्वर्ग लोक, सृष्टि के विस्तार हैं तो 'तीन लोकमंदिर' भी सटकर ही बन रहा है। चौथा निर्माण- तीस चौबीसी मंदिर, जहां भूत, वर्तमान और भविष्य 720 मूर्तियों में एक साथ दिखाई देंगे। अयोध्या के नवनिर्माण में यह अध्याय भी शीघ्रता से जुड़े, इसके लिए दिगंबर जैन अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष रवींद्रकीर्ति स्वामी और गणिनी प्रमुख ज्ञानम अयोध्या में विराजमान हैं। पिछले साल उनकी ही प्रेरणा से सहयोग जुटाने के लिए अयोध्या तीर्थ प्रभावना रथ राजस्थान से होकर लौटा है। जैन परंपरा में द्रो ही शाश्वत तीर्थ हैं- पहला अयोध्या और दूसरा सम्मेद शिखर, जहां से तीर्थकरों ने मोक्ष के लक्ष्य को प्राप्त किया।

भगवान राम के वंशजों में अनेक चक्रवर्ती सम्राट हुए। किंतु जैन परंपरा अपने आराध्यो को चक्रवर्ती कहती है। प्रथमतीर्थंकर भगवान ऋषभदेव तो विश्व शांति के प्रथम अवतार ही हैं। एक प्रकार से अयोध्या इस महान परंपरा की गंगोत्री है। चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर ने भी कुछ समय यहां बिताया था। अयोध्या की टक्कर का दूसरा प्राचीन नगर धरती पर ढूंढ़ना मुश्किल है, जहां इतिहास के भयावह थपेड़ों को झेलते हुए महान पूर्वजों से जुड़ी हजारों वर्ष पुरानी स्मृतियों को क्रमबद्ध रूप से सहेजकर रखा गया। इसमें कई पीढ़ियां खपी हैं।

❑❑❑

सुदर्शन वनवासी बालक छात्रावास में राज्यपाल ने छात्रों एवं मातृशक्तियों से किया संवाद

पन्ना। इंद्रपुरी कॉलोनी स्थित सुदर्शन वनवासी बालक छात्रावास में मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगू भाई पटेल का छात्रावास में रहने वाले अनुसूचित जनजातिय छात्रों एवं उनका निःस्वार्थ सहयोग करने वाले प्रबुद्ध जनों व मातृशक्तियों से 13 जनवरी 2024 को संवाद हुआ।

महामहिम राज्यपाल ने छात्रावास में हर संभव सहयोग करने का आश्वासन देते हुए छात्रों एवं सहयोगियों की हृदय से प्रसंसा की उन्होंने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय और सबकी सेवा में ही जीवन की बहुतेरी खुशियां प्राप्त होती है। कार्यक्रम को बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष श्री वी डी शर्मा ने भी राज्यपाल के बारे में विस्तार से चर्चा की उपरोक्त कार्यक्रम में मंच पर पन्ना के लोकप्रिय विधायक ब्रजेन्द्र प्रताप सिंह, पवई विधायक प्रह्लाद लोधी एवं गुनोर विधायक राजेश वर्मा के साथ मधुकर राष्ट्रोत्कर्ष समिति के अध्यक्ष अवध चौबे एवं सचिव लक्ष्मीकांत शर्मा उपस्थित रहे इससे पहले चितकुआँ शाखा मैदान पर नगर संघ चालक संजय अग्रवाल ने राज्यपाल जी की अगवानी एवं विभाग कार्यवाह रमेश पटेल व वरिष्ठ सदस्य छोटेलाल साहू ने शाल श्रीफल और स्मृति चिन्ह देकर उनका स्वागत किया। सुदर्शन सेवा प्रकल्प का 2013-14 से वर्तमान तक का प्रतिवेदन इंजीनियर योगेन्द्र भदौरिया द्वारा प्रस्तुत किया गया।

❑❑❑

राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा से कांग्रेस के बहिष्कार से नाराज होकर जिला पंचायत उपाध्यक्ष से दिया इस्तीफा

दमोह जिला पंचायत उपाध्यक्ष मंजू धर्मेंद्र कटारे ने कांग्रेस के सभी दायित्व से अपना इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने यह इस्तीफा मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी को भेजा है। उन्होंने अपने त्यागपत्र में लिखा है कि कांग्रेस ने भगवान श्री राम के अयोध्या में बने मंदिर के बाद भगवान राम लला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने को लेकर जो दिया किया है, इससे वह काफी दुखी है और इसी के कारण उन्होंने त्यागपत्र दे दिया।

❑❑❑

प्रेरक प्रसंग

पंच प्यारे

एक बार गुरु गोविन्दसिंह जी ने शिष्यों की परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने तम्बू में पहले से पाँच बकरे बाँधकर रख दिये और उपस्थित सिक्ख समूह के सामने, जिनकी संख्या लगभग पाँच हजार थी, हाथ में नंगी तलवार लेकर आये और कहा, ''क्या तुममें से कोई एक अपना सिर देने को तैयार है? हमें एक सिर की जरूरत है।'' यह सुन सारे लोग स्तब्ध रह गये। गुरु ने फिर पूछा, ''क्या कोई भी मुझे अपना सिर देने को तैयार नहीं?'' इतने में एक सिख सामने आया और बोला, ''मेरा सिर हाजिर है।'' गुरु उसे तम्बू के अन्दर ले गये और उसे एक ओर बिठाकर उन्होंने तलवार से एक बकरे का सिर काट डाला। फिर खून से सनी तलवार के साथ बाहर आये और उन्होंने कहा, ''खून की कमी है। क्या और कोई एक सिर दे सकता है?'' एक दूसरा सिख सामने आया। गुरु उसे भी अन्दर ले गये और उसे बिठाकर उन्होंने दूसरे बकरे का सिर काटा और बाहर आकर एक और सिर की माँग की। इस तरह कुल पाँच सिक्ख अपना सिर देने को तैयार हुए। उन सबको अन्दर बिठाकर वे फिर बाहर आये और उन्होंने और सिर की माँग की, लेकिन अब सब डर गये थे और कोई भी मौत के मुँह में जाने को तैयार न था। तब वे बोले, 'बड़े दुःख की बात है कि पाँच हजार में से केवल पाँच ही निकले, जिन्होंने गुरु की खातिर अपना सिर देने की पेशकश की।' फिर वे अन्दर गये और उन पाँचों सिक्खों को बाहर लाकर उन्होंने सबसे कहा, ''मैं तुम लोगों की परीक्षा ले रहा था कि कौन गुरु के लिये अपनी जान की परवाह नहीं करता। केवल ये पाँच सिख इस परीक्षा में खरे उतरे, इसलिए आज से ये 'पंच प्यारे' कहलायेंगे। आज भी सिख सम्प्रदाय में 'पंच प्यारे' की बड़ी महिमा है।''

❑❑❑

महत्वपूर्ण दिवस माह फरवरी

1 फरवरी – कल्पना चावला पुण्यतिथि
2 फरवरी – विश्व आद्र भूमि दिवस
3 फरवरी – विश्व कैंसर दिवस
3 फरवरी – प्रभु नित्यानंद जयंती
4 फरवरी – भीम सेन जोशी जयंती
5 फरवरी – संत रविदास जयंती
11 फरवरी – पं. दीनदयाल उपाध्याय पुण्यतिथि
11 फरवरी – क्रन्तिकारी तिलका मांझी जयंती
13 फरवरी – सरोजनी नायडू जयंती
14 फरवरी – वसंत पंचमी
15 फरवरी – सुभद्रा कुमारी चौहान पुण्यतिथि
16 फरवरी – नर्मदा जयंती
17 फरवरी – वासुदेव बलवंत फड़के पुण्यतिथि
18 फरवरी – मदनलाल धीगरा जयंती
19 फरवरी – गोपाल कृष्ण गोखले पुण्यतिथि
19 फरवरी – माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (श्री गुरूजी) जयंती
21 फरवरी – मातृभाषा दिवस
21 फरवरी – सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जयंती
22 फरवरी – स्वामी श्रद्धानन्द जयंती
23 फरवरी – संत गाडगे महाराज जयंती
26 फरवरी – वीर सावरकर पुण्यतिथि
27 फरवरी – नानाजी देशमुख पुण्यतिथि
27 फरवरी – चंद्रशेखर आजाद पुण्यतिथि
28 फरवरी – डा. राजेंद्र प्रसाद पुण्यतिथि

अमृत वचन

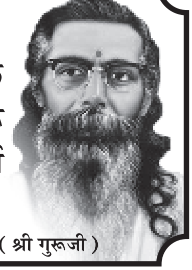

हमारी मातृभूमि भारत, एक रूप में ही माता-पिता एवं गुरू तीनों का कर्त्तव्य हमारे प्रति पूर्ण करती है।

– माधव सदाशिवराव गोलवलकर (श्री गुरूजी)

इस पखवाड़े क्या करें किसान

इस बार ठंड लगातार कम-ज्यादा हो रही है। अभी तक तो रबी की फसल काफी अच्छी है। कुछ स्थानों पर शीतलहर और पाला गिरने से चना, धनिया आदि फसलों में काफी नुकसान हुआ है।

(1) गेहूँ की खड़ी फसल में यूरिया की टाप ड्रेसिंग करें।

(2) सरसों की फसल में फल्लियों बनाते समय सिंचाई करें।

(3) चने की फसल में फूल आते समय सिंचाई अवश्य करें।

(4) शीतकालीन सब्जियों में खरपतवार नियंत्रण करें।

(5) पपीता में प्रति पौधा 30-40 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम सुपर फास्फेट एवं 75 ग्राम एमओपी डालकर मिट्टी में गुड़ाई कर मिला दें।

(6) आलू की फसल में यूरिया डालकर सिंचाई करें।

(7) पशुशाला का फर्श गीला न होने दें। सूखा रखें लगाएँ। धान का पुआल हो तो बिछाने के काम में लें। इसमें बिछावन की मोटी तह अच्छी गर्मी रहती है।

❑❑❑

सागर जिले के रेस्टोरेंट में भोजन करेंगे वन्य प्राणी गिद्ध

प्राकृतिक संतुलन होने से गिद्धों का जीवन संकट में है पहले के मुकाबले अब गिद्धों के झुंड भी बहुत ही कम देखे जाते हैं इसके बाद वन विभाग ने गिद्ध रेस्टोरेंट शुरू करने का विचार किया। 2021 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश में करीब 10000 से अधिक गिद्ध है। जिनके लिए अप्रैल से गिद्ध रेस्टोरेंट सागर में शुरू किया जा रहा है और अगर यह सफल हुआ तो अनेक जगह गिद्ध रेस्टोरेंट भी खोले जा सकते हैं यहां उन्हें संपूर्ण भोजन की सुविधा मुहैया कराई जाएगी।

❑❑❑

वक्तव्य

मुसलमानों को काशी ज्ञानवापी और मथुरा श्री कृष्ण जन्मभूमि भी हिंदुओं को सौंप देनी चाहिए।

– के. के. मोहम्मद
प्रसिद्ध पुरातत्वविद्

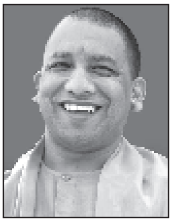

अब अयोध्या की गलियों में गोलियों की गड़गड़ाहट नहीं होती, बल्कि दीपोत्सव होगा। अब कोई अयोध्या की परिक्रमा में बाधा नहीं बन पायेगा।

– योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश

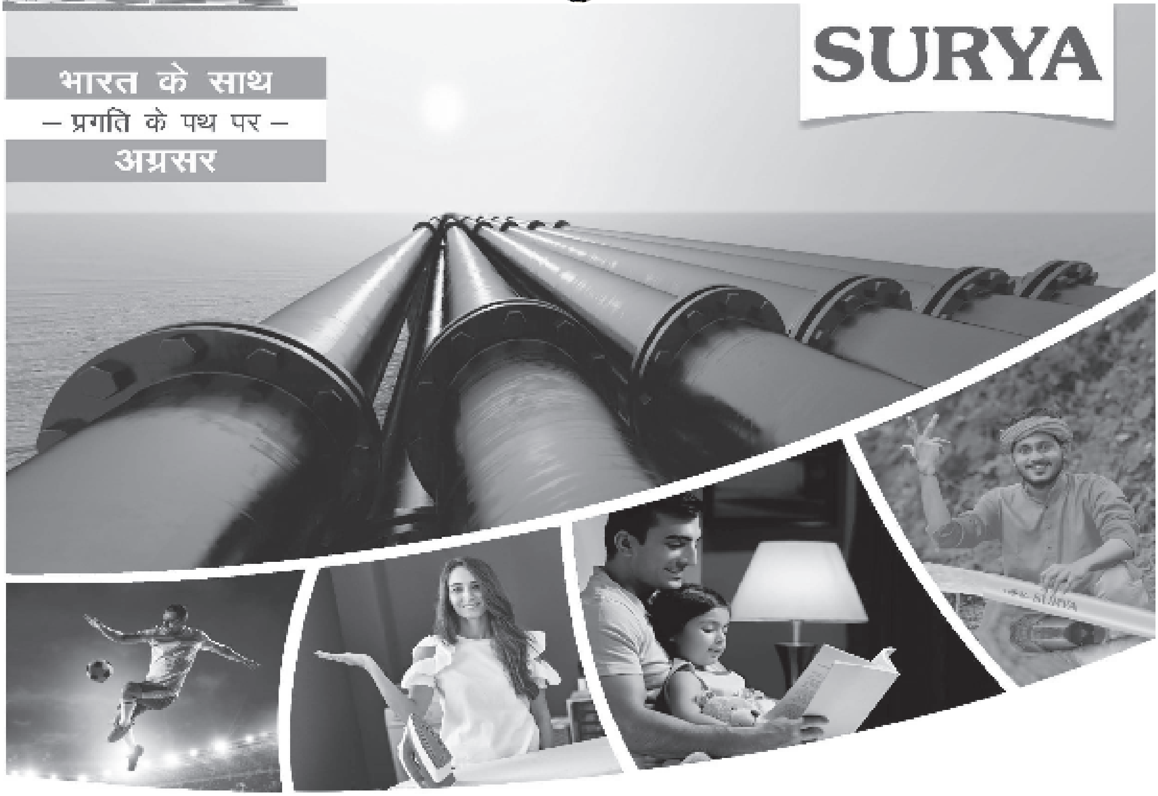

हमारे अनेक अत्याधुनिक उत्पादों के संग पूरा भारत एक है। हर भारतीय घर रोशनी से जगमग है। देश बदलने वालों के लिए हम नई रोशनी है। नए - नए कीर्तिमान कर रहे हैं। व्यवसाय जगत में दुनिया की रुझान समझते हैं। चुनौतियों को भांप लेते हैं और फिर खुद को तेजी से बदल लेते हैं। काम करने का तरीका बेहतर बना रहे हैं और अच्छे परिणाम दे रहे हैं। भारत की तरह, जो लगातार तरक्की कर रहा है, नई ऊंचाई को छू रहा है, सूर्या ने भी पिछले 5 दशकों में सफलता की जो कहानी लिखी है वह अविश्वसनीय है

सन् 1973 में शुरुआत कर सूर्या ने एक लंबा और स्वर्णिम सफर तय किया है।

I am SURYA | CELEBRATING 50 YEARS OF TRUST | DURABLE PRODUCTS | ASSURED QUALITY

CONSUMER LIGHTING | PROFESSIONAL LIGHTING | APPLIANCES | FANS | PVC PIPES | STEEL PIPES

SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | Tel.: +91-1147108000

Toll Free No.: 1800 102 5657
/suryalighting | /surya_roshni

सन्त शिरोमणि रविदास

– डॉ. किशन कछवाहा

पूज्य सन्त शिरोमणि गुरू रविदास जी महाराज हिन्दू समाज विशेषकर सनातन धर्म के महान स्तम्भ हैं।

भारतीय समाज में सामाजिक समरसता एवं आध्यात्मिक ज्योति उन्होंने प्रज्जवलित की थी, उसका व्यापक प्रकाश आज भी अपना अलौकिक प्रभाव बनाये हुये हैं। उस युग में ऐसे ही प्रभावी सन्तों सूर, तुलसी, जायसी, मीरा आदि की भी गणना की जाती है। इन सन्तों का आविर्भाव ऐसे निराशा हताशा की कालावधि में हुआ था, जब इस्लाम संप्रदाय द्वारा हिन्दुओं पर भारी अत्याचार किये जाते रहे हैं। विशेष कर यह समय सम्वत् 1375 से 1700 तक लगभग 300 वर्षों का कहा जाता है। उस समय तलवार की नोंक पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जा रहा था।

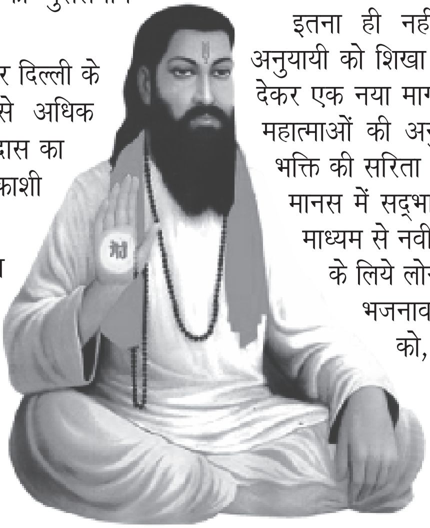

सन् 1398 में तैमूर ने आक्रमण कर दिल्ली के आस-पास ही लगभग पाँच हजार से अधिक हिन्दुओं की हत्यायें की थीं। सन्त रविदास का जन्म सन् 1433 में माघ पूर्णिमा के दिन काशी के निकट ग्राम मांडुर में हुआ था।

उन्होंने अपने वंश की विशेषता बतलाते हुये कहा है कि "सुनि रविदास कही आस वानी, बोले झूठ नीच अभिमानी। हमरों एक सत्य से नाता, चँवर वंश राहू मम त्राता। हैं, हम काशीपुरी निवासा, हरि के भक्त नाम रविदासा। पिप्पल गोत विदित जगमाही, यामै नैक अन्यथा नहीं।"

वे मानवतावादी, समरसता मूलक, ईश्वरत्व के सजग प्रहरी थे। उनका प्रभाव, उनकी प्रशस्ति सुनकर कृष्णभक्त मीरा ने भी उन्हें अपना गुरू-मान लिया था। उनकी महत्ता इस तथ्य से भी उजागर हो जाती है कि गुरूग्रंथ साहिब में भी उनकी वाणियों का संकलन मिलता है।

भक्त रविदास हमारी विरासत, हमारे वांगमय और आर्य मनीषा की विलक्षण विभूति माने जाते हैं। उनके उपदेश अद्‌भुत एवं चमत्कारिक हैं। उन्होंने आडम्बरों से दूर रहते हुये आन्तरिक भक्ति का मार्ग दिखाया। मुगल बर्बरता से भयभीत समाज में आत्मविश्वास और निर्भीकता पैदा करने के लिए समाज से जुड़े अन्य सन्तों के साथ जन जागरण का अद्‌भुत कार्य किया।

यह आने वाली पीढ़ी के लिये भी संदेश था कि सभी को समरस समाज की रचना और देश की मुख्यधारा से जोड़ने के लिये सन्त रविदास महाराज से प्रेरणा लेनी चाहिये। सामाजिक क्षेत्र की वह एक बड़ी क्रान्ति थी। युगों से चली आ रही अस्पृश्यता के अभिशाप को समाप्त करने के लिए उन्होंने नैतिक सम्बल प्रदान किया था।

इसका तीव्रगति से प्रभाव भी हुआ और यह वंचित कहा जाने वाला समाज जन सामान्य में अपना खोया स्थान प्राप्त कर सका। सन्त रविदास जी महाराज ने जातिवर्ण के भेद से ऊपर उठकर सभी को भक्ति का अधिकारी माना। उन्होंने एक आग्रही हिन्दू के समान हिन्दुत्व का जागरण और प्रचार किया।

इतना ही नहीं, उन्होंने सदनी नामक इस्लाम के अनुयायी को शिखा धारण कराकर तथा उसे रामदास नाम देकर एक नया मार्ग भी प्रशस्त किया। यह भारत के सन्त महात्माओं की अनुपम विशेषता है कि उन्होंने न केवल भक्ति की सरिता प्रवाहित की, वरन् समय-समय पर जन मानस में सद्‌भावना एकता और सौहार्द्र की त्रिवेणी के माध्यम से नवीन चेतना प्रसारित कर समाज के उत्थान के लिये लोगों को प्रेरित किया। उन्होंने अपनी मधुर भजनावलि के माध्यम से ऊँच-नीच के भेदभाव को, जो उस समय चरम पर था, को सारहीन और निरर्थक और निरूपित किया।

उन्होंने यह भी कहा कि ईश्वर की प्राप्ति सदाचार, परहित की भावना तथा सद्व्यवहार को आचरण में उतार लेने से ही सम्भव है। उन्होंने कहा- "जन्म-जाति को छोड़कर, करनी जान प्रधान, इहो वेद को धर्म है, कहे रविदास बखाना।" उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से ऐसा अनोखा आन्दोलन खड़ा किया, जिसके मूल में सामाजिक एकता समानता, समरसता, सामंजस्य और मानवीय मूल्यों के प्रति गहन आस्था निहित है। वर्तमान समय में भी सन्त रविदास के उपदेश समाज के कल्याण तथा उत्थान के लिये सामयिक हैं। उनके पद, भजन, दोहे और चौपाईयाँ एवं उपदेश अत्यधिक प्रभावी हैं। उन्होंने अपने आचरण तथा व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य अपने जन्म तथा व्यवसाय के आधार पार पर महान नहीं होता वरन् विचारों की श्रेष्ठता समाज के हित की भावना से किये गये कार्यों तथा सद्व्यवहार जैसे गुणों से महान बन सकता है।

❑❑❑

नवाचार : 14 सौ किस्मों की पीढ़ियों पुरानी फसलों का होगा संरक्षण

जनजाति अंचलों में पुरातन काल से उगाई जा रही फसलों की किस्मों के संरक्षण का कार्य कृषि विश्वविद्यालय ने शुरू किया है। इसके तहत इन फसलों को संरक्षित करने के साथ ही इनके सरंक्षण की दिशा में भी पहल शुरू की जा रही है। इसके लिए विश्वविदयालय द्वारा वैज्ञानिकों की टीम तैयार की गई है जो खेती से जुड़ी किस्मों और पद्धतियों पर कार्य कर रही है।

पुरानी व क्षेत्र विशेष की बहुमूल्य किस्मों को संरक्षित करने के उददेश्य से अभी तक 153 किसानों द्वारा पंजीयन कराया जा चुका है। इसमें धान, गेहूं, चना और सोयाबीन को मिलाकर कुल 13 फसलें शामिल हैं। यह फसले जनजाति इलाकों में उगाई जा रही हैं। जबलपुर, मंडला, डिंडौरी, छिंदवाडा, बालाघाट जैसे बेल्ट से भी किसानों द्वारा लंबे समय से उत्पादित की जा रही किस्मों को जोड़ा गया है। प्रदेश के कुल 17 जिले के किसान शामिल हैं।

संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जी के कौतु कहते हैं कि किसानों को परंपरागत एवं महत्वपूर्ण फसलों को वर्षों से उगाया जा रहा है। कृषकों को इसका व्यापक लाभ कैसे प्राप्त हो, इस दिशा में सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं।

भारत सरकार नई दिल्ली के पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण द्वारा विगत वर्षों से अब तक कुल 153 किसानों की किस्मों का पंजीयन हो चुका है। आदिवासी जनजाति क्षेत्रों की 52 फसलों की साढ़े 14 सौ किस्मों को चिन्हित किया गया है। जिसे आगामी वर्षों में पंजीयन कराने का लक्ष्य रखा गया है। प्लांट वैरायटी प्रोटेक्शन सेल प्रभारी डॉ. स्तुति शर्मा कहती हैं कि आदिवासी बैल्ट में लंबे समय से उगाई जा रही पारंपरिक किस्में आज भी लाभदायक हैं, उनमें विभिन्न मौसम को सहने की अभूतपूर्व क्षमता है।

❑❑❑

जबलपुर में रजिया बी बनी नंदनी - पति अपने धर्म को निभाएगा, पत्नी अपना

जबलपुर। अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होते ही लोगों के अंदर बदलाव की बयार आ गई है। इसका सबसे पहला असर जबलपुर में देखने को मिला है। जबलपुर में एक संप्रदाय की युवती ने सनातन धर्म को अपना लिया है। कल तक जो महिला रजिया बी के नाम से जानी जाती थी वह अब नंदनी के रूप में पहचानी जाएगी।

इसमें दिलचस्प बात ये है कि महिला का पति अपने धर्म का पालन करेगा जबकि महिला सनातन धर्म पर अपनी जिंदगी बिताएगी। हालांकि महिला को भरोसा है कि पति भी जल्द सनातन धर्म को अपना लेंगे।

गोहलपुर में रहने वाली रजिया बी को सदर स्थित हनुमान मंदिर में प्रधान पुजारी पं. अमित शर्मा के द्वारा शुद्धिवाचन कर सनातन धर्म की दीक्षा दिलाई। रजिया बी से नंदनी बनी महिला का कहना है कि काफी समय से वह सनातन धर्म को अपनाना चाहती थी। कुछ दिन पूर्व नवरात्रि में अक्टूबर माह में भी एक लड़की ने सनातन धर्म अपनाया था। उसी से प्रेरणा लेकर आज सनातन धर्म स्वीकार किया।

रजिया बी से नंदनी बनी महिला ने बताया कि उसके दो बच्चे हैं और उनका भी सनातन धर्म की तरफ झुकाव है।पति शेराशहनवाज को सनातन धर्म अपनाने से कोई परेशानी नहीं है उनका कहना है कि वह अपने धर्म का पालन करेंगे परंतु मुझे सनातन धर्म अपनाने से नहीं रोकेंगे।

❑❑❑

दमोह जिले में लव जिहाद

दमोह के कोटा कला गांव में रहने वाले मुबारक खान नाम के युवक के साथ एक हिंदू धर्म की युवती ने लिविंग रिलेशनशिप के अंतर्गत एक अनुबंध किया है। वह युवक से भोपाल में मिली। युवती के माता-पिता का आरोप है कि आरोपी मुबारक युवती को यहां से भगा ले गया है। पुलिस में शिकायत दर्ज होने के बाद युवती को खोज लिया गया, जो फिलहाल वन स्टाफ सेंटर में है। इस मामले को हिंदू संगठन के युवाओं ने लव जिहाद बताते हुए विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया।

❑❑❑

चाक से समृद्ध हुआ पुष्पा की जीवन

परिवार के भरण पोषण के लिए ठुकराई सामाजिक प्रतिबंध

बालाघाट जिले के लिंगा गांव की रहने वाली पुष्पा घाटेश्वर से जुड़ी है, जो पति की मृत्यु के बाद आर्थिक हालात के आगे इतनी कमजोर हो गई कि सामाजिक प्रतिबंध को ठुकराना ही उसकी मजबूरी बन गई। पति की मृत्यु के बाद वहाँ एकदम अकेली हो गई और उसे अपने परिवार के लालन-पालन के लिये कोई रोजगार भी नहीं सुझ रहा था। ऐसे में उसने पति के काम को ही महत्व देने का निर्णय लिया और समाज की प्रतिबंधों को ठुकराकर अपने बच्चों के भरण पोषण के लिए चाक पर काम करते हुए मिट्टी के बर्तन व दीये बनाने शुरू कर दिये। जिन्हें बेचकर वह पिछले 07 सालो से अपनी जीविका चलाती आ रही है।

जबकि सामाजिक मान्यता है कि कुम्हार समाज की महिलायें कभी चाक पर काम नहीं करती, समाज ने महिलाओं को चाक चलाने पर प्रतिबंध लगा दिया है। यदि समाज के इस नियम को कोई तोड़ता है तो उसे सामाजिक दंड भुगतना पडता है। लेकिन पुष्पा घाटेश्वर ने हालात के आगे नतमस्तक होकर सारी प्रतिबंधों ठुकरा दी। पति द्वारा बनाये गये चाक पर काम करते हुए मिट्टी के बर्तन बनाने शुरू कर दिये। अब वह मिट्टी के बर्तनों को बेचकर जीविका चलाने लगी है। वही उसके बच्चे भी माँ का हाथ बटाते है। पुष्पा ने 2000 दीप बनाकर श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा हेतु भेंट किया।

❑❑❑

जय श्रीराम बोलने पर अंग्रेजी शिक्षक अब्दुल वाहिद की क्रूरता

शहडोल के बुढ़ार के ग्रीन वेल्स पब्लिक स्कूल में शनिवार को दोपहर में सातवीं कक्षा के छात्र नितिन गुप्ता ने जय श्रीराम के नारे लगा दिए। इसी दौरान क्लास के बाहर से गुजर रहे अंग्रेजी शिक्षक अब्दुल वाहिद ने छात्र को बुलाया। उसे डांटने के साथ पिटाई कर डाली।

छात्र ने स्कूल डायरेक्टर शरीफ नियाजी से इस बात की शिकायत की लेकिन उन्होंने भी उसे डांटकर भगा दिया। इसके बाद छात्र ने घर लौटकर परिजन को मामले की जानकारी दी।

पुलिस ने FIR दर्ज कर देर शाम दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस ने शहर में फ्लैग मार्च भी निकाला।

पहले भी विवादों में रहा है स्कूल – शिक्षक अब्दुल वाहिद एवं प्राचार्य गुरुविंद सिंह के विरुद्ध धारा 153, 323, 500, 34, 75-82 बाल्य न्याय अधिनियम की धाराओं में केस दर्ज किया गया है। स्कूल पहले भी विवादों में रहा है। भारत के नक्शे को लेकर हुए विवाद के कारण स्कूल डायरेक्टर शरीफ नियाजी को एक बार पहले भी जेल जाना पड़ा था।

प्राचार्य को भी माना आरोपी, केस दर्ज – ग्रीन वेल्स पब्लिक स्कूल में जय श्रीराम राम बोलने पर पिटाई के मामले में बुढ़ार पुलिस ने अब स्कूल के प्राचार्य को भी आरोपी मानकर गिरफ्तार कर लिया है।

प्राचार्य गुरविंद सिह के खिलाफ धारा 153, 323, 500,24, किशोर न्याय अधिनियम की धारा 75,82 के तहत केस दर्ज किया गया है।

❑❑❑

कर्पूरी ठाकुर मरणोपरांत हुए भारत रत्न से सम्मानित

सामाजिक न्याय के पुरोधा और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर की आज 100वीं जन्म जयंती है। एक दिन पहले ही मंगलवार को भारत सरकार ने कर्पूरी ठाकुर को मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किए जाने की घोषणा की है। दिवंगत कर्पूरी ठाकुर अपने सागदीपूर्ण जीवन के कारण जननायक के नाम से मशहूर थे।

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी नेता रहे कर्पूरी ठाकुर को मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया जाएगा। राष्ट्रपति कार्यालय की ओर से यह घोषणा दिवंगत ठाकुर की जयंती से एक दिन पहले की गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कर्पूरी ठाकुर को सामाजिक न्याय का प्रतीक, बताया है। पीएम ने कहा, दलितों के उत्थान के लिए उनकी अटूट प्रतिबद्धता और उनके दूरदर्शी नेतृत्व ने भारत के सामाजिक-राजनीतिक ताने-बाने पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

कर्पूरी ठाकुर को सामाजिक न्याय का पर्याय और उत्तर भारत में पिछड़े वर्गों की वकालत करने वाले राजनेता के तौर पर जाना जाता है। नाई समुदाय में गोकुल ठाकुर और रामदुलारी देवी के घर जन्मे कर्पूरी का पैतृक गांव समस्तीपुर जिले का पितौंझिया गांव (अब कर्पूरी ग्राम से जाना जाता है) है। उन्होंने एक सीमांत किसान के बेटे से बिहार के दो बार मुख्यमंत्री और एक बार उप मुख्यमंत्री तक का सफर तय किया। जीवन में सरलता और सादगी के कई किस्से आज भी उदाहरण के तौर पर दिए जाते हैं।

❑❑❑

डिंडोरी के जनजाति कल्याण केन्द्र में सिकिल सेल एनीमिया इकाई का किया गया शुभारंभ

उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा है कि सिकल सेल एनीमिया के नियंत्रण के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। सिकल सेल एनीमिया जनजातीय समाज के लिए एक बड़ी चुनौती है। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि सिकल सेल एनीमिया बीमारी बहुत कष्टदाई होती है। इसके मरीजों के जोड़ों में हमेशा दर्द रहता है, शरीर में सूजन और थकावट रहती है। लंबे समय तक दर्द सहने वाले मरीज के शरीर के अंदरूनी अंग भी क्षतिग्रस्त होने लगते हैं। ये बीमारी परिवारों को बिखेर देती है। ये बीमारी माता-पिता से ही बच्चे में आ सकती है, ये आनुवांशिक है।

उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने आज डिंडोरी में जनजाति कल्याण केन्द्र परिसर में एनटीपीसी के सहयोग से निर्मित 6 करोड़ लागत की सिकल सेल एनीमिया यूनिट का शुभारंभ किया। इस यूनिट से डिंडोरी, मंडला, उमरिया की आबादी में रोगियों की पहचान और उसके इलाज की सुविधा होगी। मिशन मोड में कार्य कर सिकल सेल एनीमिया से करेंगे प्रदेश को मुक्त उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विगत वर्ष शहडोल में राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन अभियान की शुरुआत की। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 2047 तक हम सब मिलकर मिशन मोड में अभियान चलाकर सिकल सेल एनीमिया से प्रदेश को मुक्ति दिलाएंगे। उल्लेखनीय है कि सिकल सेल एनीमिया यूनिट में 40 वर्ष के उपर के व्यक्तियों की जाँच की जायेगी। प्रतिदिन 200 मरीजों की जांच की जा सकेगी।

❑❑❑

✤ वदतु संस्कृतम् ✤

डॉ. मनोज पाण्डेय
प्रांत संगठन मंत्री (संस्कृत भारती)

संस्कृत	हिन्दी
तदानीमेव उक्तवान् खलु?	तभी मैंने कहा था न?
कदा उक्तवान्?	कब कहा?
यत्किमपि भवतु।	चाहे कुछ भी हो।
सः बहुसमीचीनः।	वह बहुत अच्छा है।
सः बहुरूक्षः।	वह बड़ा रूखा है।

प्रिय पाठकगण

''शाश्वत हिन्दू गर्जना'' पत्रिका के सम्बंध में अपने सुझाव एवं विचार कृपया इस व्हाट्सएप नम्बर पर अपना पूर्ण परिचय, पता एवं पासपोर्ट साइज फोटो सहित प्रेषित करें।

श्याम साहू - 9522525363

? जीतें पुरस्कार बाल मित्रों फरवरी का अंक पढ़ने के पश्चात निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर अपने उत्तर सीट में भरकर **9522525363** पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम ''**शाश्वत हिन्दू गर्जना**'' में प्रकाशित किये जाएगें तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरूस्कृत भी किया जायेगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल किशोर ही भाग ले सकते है। **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि 25 फरवरी 2024**

1. गोविंद देव गिरिजी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तुलना किस राजा से की ?
   (1) राजा हरिशचंद्र (2) छत्रपति शिवाजी (3) महाराणा प्रताप (4) राजा छत्रसाल

प्र.2 रामजन्म भूमि के लिये जन आंदोलन किस दशक से प्रारंभ हुआ?
   (1) 1960 (2) 1970 (3) 1980 (4) 1990

प्र.3 राष्ट्र और धर्म हित में मतभेदों को भुला कर एकता का संदेश ही भारतीय परंपम्परा है ि कस ने कहा?
   (1) विजयेन्द्र सरस्वती जी (2) वासुदेवानंद जी (3) श्रृद्धानंद जी (4) विश्वतिर्थ जी

प्र.4 सीता अम्मन मंदिर किस देश में है?
   (1) नेपाल (2) अफगानिस्तान (3) भारत (4) श्रीलंका

प्र.5 इस वर्ष (2024) में नर्मदा जयंती कब है?
   (1) 15 फरवरी (2) 20 फरवरी (3) 16 फरवरी (4) 21 फरवरी

प्र.6 मुस्लमानों को काशी ज्ञानवापी और मधुरा श्री कृष्ण जन्मभूमि भी हिन्दुओं को सौंप देनी चाहिए। किसने कहा?
   (1) के.के. मोहम्मद (2) शहनाज हुसैन (3) मुक्तार अब्बास नकबी (4) योगी आदित्यनाथ

प्र.7 संत रविदास का जन्म किस प्रसिद्ध स्थान पर हुआ ?
   (1) अयोध्या (2) मथुरा (3) उज्जैन (4) काशी

प्र.8 अयोध्या में श्रीराम लला को विजय के प्रतीक के रूप में क्या पहनाया गया है ?
   (1) कुण्डल (2) कण्ठा (3) वैजयंती (4) करधनी

प्र.9 श्री राम लला की प्राणप्रतिष्ठा किसी आग को नहीं ऊर्जा को जन्म दे रही है किसने कहा?
   (1) डॉ. मोहन भागवत (2) योगी आदित्यनाथ (3) नरेन्द्र मोदी (4) गोविंद देवगिरि

प्र.10 श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा के दिन छतरपुर में जन्में जुड़वा बच्चों का क्या नाम रखा है?
   (1) राम-लक्ष्मण (2) भरत-शत्रुघ्न (3) कृष्ण-अर्जुन (4) इनमें से कोई नहीं

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें।

(बाल प्रश्नोत्तरी- 10)

(कृपया अपनी पासपोर्ट साईज की फोटो भी व्हाट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )
4.( ) 5.( ) 6.( )
7.( ) 8.( ) 9.( )
10.( )

नाम..................................

पिता का नाम ....

उम्र .... पूर्ण पता ....

....

पिन .... जिला..................

मोबाईल नं.............................

बाल प्रश्नोत्तरी- 9 के परिणाम

सौम्या चौधरी

ईशिका सिंह

प्रथम पटेल

अनाया गोल्हानी

कान्हा गुप्ता

1. सौम्या चौधरी - परसवाड़ा, बैहर
2. ईशिका सिंह - परासिया, छिदंवाड़ा
3. प्रथम पटेल - सिहोरा, जबलपुर
4. अनाया गोल्हानी - लखनादौन
5. कान्हा गुप्ता - मझगंवा, सतना
6. सिद्धधी उपाध्याय- दमोह
7. अराध्या शर्मा - जबलपुर
8. सुजय बर्बे - सिवनी
9. यशोवर्धन सोनी-टीकमगढ़
10. माही सराफ - सागर

प्रथम 5 विजेताओं को पुरुस्कार भेजे जा रहे हैः-

सही उत्तरः- 1 (3), 2 (2), 3 (4), 4 (1), 5 (3), 6 (1), 7 (2), 8 (1), 9 (2), 10 (1)

सुभाषित

राम राम कहि जे जमुहाहीं।
तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं।।
यह तौ राम लाइ उर लीन्हा।
कुल समेत जगु पावन कीन्हा।।

भावार्थ

जो लोग राम-राम कहकर जँभाई लेते हैं (अर्थात आलस्य से भी जिनके मुँह से राम-नाम का उच्चारण हो जाता है), पापों के समूह (कोई भी पाप) उनके सामने नहीं आते। फिर इस गुह को तो स्वयं श्री रामचन्द्रजी ने हृदय से लगा लिया और कुल समेत इसे जगत्पावन (जगत को पवित्र करने वाला) बना दिय।।

सबके राम-सबमें राम
होई शगुन शुभ विविध विधि, बाजहीं गगन निशान
पुर नर नारी सनाथ करि, भवन चले भगवान।।
राष्ट्र की चेतना के प्रतीक प्रभु श्रीराम
के नव विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा पर
सभी को हार्दिक बधाई.
दीपोत्सव जबलपुर
राकेश सिंह
लोक निर्माण मंत्री (म.प्र. शासन)

फरवरी 2024 आर. एन.आई. संख्या– 69274 / 94 डाक पंजीयन संख्या –ल 4 / एनपी /शाहिग / एसएसपी जबलपुर 33 / 2023 2024 शाश्वत हिन्दू गर्जना

श्रीराम लला प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव अयोध्या 22 जनवरी 2024

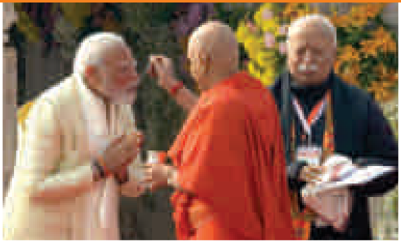

डॉ. प्रदीप दुबे निर्वाचित हुए प्रांत संघचालक

जबलपुर के प्रसिद्ध शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप दुबे आगामी तीन वर्षों के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ महाकौशल प्रांत के प्रांत संघचालक निर्वाचित हुए है। प्रांत संचालक ने अपनी नई कार्यकारिणी का गठन किया जिसमें सतना के श्री उत्तम बनर्जी को प्रांत कार्यवाह तथा नरसिंहपुर के श्री विनोद नेमा व सिवनी के श्री अनिल चन्द्रवंशी को सह प्रांत कार्यवाह नियुक्त किया।

प्रतिष्ठा में,

प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र जैन द्वारा विश्व संवाद केन्द्र महाकौशल न्यास, प्लॉट नं. 1692, नव आदर्श कॉलोनी के लिए ग्रेनेडियर्स एसोसिएशन प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर द्वारा मुद्रित प्रकाशन स्थान विश्व संवाद केन्द्र, प्लॉट नं. 1692, नव आदर्श कॉलोनी, गढ़ा रोड, जबलपुर मध्य प्रदेश दूरमाष 0761–4006608, संपादक –डॉ. किशन कछवाहा